नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नेपाल से फ्रांस तक फैली असंतोष की ज्वाला

नेपाल और फ्रांस! दो भौगोलिक रूप से दूरस्थ और सांस्कृतिक रूप से भिन्न देश, लेकिन दोनों की सड़कों पर इस समय एक समान दृश्य है, असंतोष, आक्रोश और हिंसा. एक ओर नेपाल का राजनीतिक संकट अंतरिम व्यवस्था की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा है, तो दूसरी ओर फ्रांस की राजधानी पेरिस की सड़कों पर धुआं और आगजनी ने यूरोप को अस्थिरता का नया संदेश दिया है. सवाल यह है कि इन दोनों घटनाओं में समान सूत्र क्या है और दुनिया को इससे क्या सीख लेनी चाहिए.

नेपाल में हालात लंबे समय से अस्थिर रहे हैं. संवैधानिक संस्थाओं पर भरोसा घटा है और राजनीतिक दलों के बीच अंतहीन खींचतान ने आम नागरिकों को निराश किया है. ऐसे समय में राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल की अगुवाई में हुई बैठक में पूर्व प्रधान न्यायाधीश सुशीला कार्की को अंतरिम सरकार का नेतृत्व सौंपने पर लगभग सहमति बनना, लोकतंत्र के लिए एक सकारात्मक संकेत है. कार्की न केवल न्यायपालिका में अपनी ईमानदार छवि के लिए जानी जाती हैं, बल्कि उन्हें निष्पक्ष और सख्त प्रशासक के रूप में भी देखा जाता है. हालांकि संसद भंग करने जैसे मुद्दों पर मतभेद बने हुए हैं, लेकिन फिर भी देश को संवैधानिक मार्ग पर वापस लाने की कोशिशें दिखाई दे रही हैं. नेपाल का यह प्रयोग यह भी दर्शाता है कि जब दलगत राजनीति गतिरोध पैदा करती है, तब समाज को स्थिरता देने के लिए तटस्थ और निष्पक्ष व्यक्तित्व की ओर देखा जाता है.

दूसरी ओर, फ्रांस में स्थिति अलग है लेकिन मूल कारण लगभग समान है यानी असंतोष. नेपाल में यह असंतोष राजनीतिक अविश्वास का परिणाम है, जबकि फ्रांस में यह सामाजिक असंतोष के रूप में फूटा है. पेरिस की सड़कों पर पुलिस और प्रदर्शनकारियों की भिड़ंत, आगजनी और सार्वजनिक संपत्ति का नुकसान इस ओर इशारा करता है कि नागरिक व्यवस्था के प्रति आक्रोशित हो उठे हैं. आंतरिक मंत्री ब्रूनो रिटेलेउ के अनुसार, प्रदर्शनकारी विद्रोह का माहौल बनाना चाहते हैं. लेकिन सवाल यह भी है कि इतनी बड़ी संख्या में लोग अचानक क्यों सड़कों पर उतर आए? स्पष्ट है कि इसके पीछे सोशल मीडिया की भूमिका अहम रही. नेपाल में भी आंदोलन और असंतोष के स्वर अक्सर डिजिटल प्लेटफॉर्मों से शुरू होकर सड़कों तक पहुंचते हैं.

इन दोनों देशों के हालात यह दिखाते हैं कि शासन व्यवस्था पर लोगों का भरोसा घटने लगे तो परिणाम हिंसा और अराजकता के रूप में सामने आते हैं. फ्रांस जैसे परिपक्व लोकतंत्र में भी पुलिस को 80,000 से अधिक सुरक्षा बलों की तैनाती करनी पड़ी, यह स्थिति दर्शाती है कि लोकतांत्रिक ढांचे की मजबूती केवल संविधान और संस्थाओं पर नहीं, बल्कि नागरिकों के विश्वास पर भी टिकी होती है. दरअसल, नेपाल में कार्की के नेतृत्व में अंतरिम सरकार बनना राजनीतिक संकट से निकलने की संभावना जगाता है.

दोनों घटनाएं इस तथ्य को रेखांकित करती हैं कि आज का वैश्विक समाज असंतोष की चिंगारियों से भरा हुआ है, जो क्षणभर में अंतरराष्ट्रीय चिंता का विषय बन सकता है. भारत सहित विश्व के अन्य लोकतंत्रों को इन घटनाओं से सबक लेना होगा. लोकतंत्र की मजबूती केवल चुनावों से नहीं आती, बल्कि संस्थाओं की पारदर्शिता, न्यायपालिका की निष्पक्षता और नागरिकों के आक्रोश को सुनने की तत्परता से सुनिश्चित होती है. नेपाल में सुशीला कार्की का नाम सहमति के साथ उभरना और फ्रांस में सरकार का कठोर रुख—ये दोनों उदाहरण हमें यह बताते हैं कि लोकतंत्र का भविष्य संतुलन, संवाद और संवैधानिक आचरण पर ही टिका है. नेपाल और फ्रांस की यह अस्थिरता वैश्विक चेतावनी है कि असंतोष की ज्वाला किसी सीमा में बंधी नहीं रहती. इसे रोकने के लिए पारदर्शी नेतृत्व और जनता के प्रति जवाबदेही अनिवार्य है.

8 साल बाद किया गया प्रयोग मोदी सरकार की दूरदर्शिता

जीएसटी और टैक्स रिफॉर्म से बदलती राजनीति की दिशा

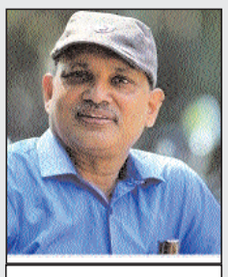

श्याम यादव

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले से जिस जीएसटी रिफॉर्म की घोषणा की, उसके प्रभाव 22 सितंबर से दिखाई देंगे. इससे पहले, इसी वर्ष के बजट में सरकार ने 12 लाख रुपए तक की आय पर आयकर समाप्त कर दिया था. महज आठ माह के भीतर जनता को दी गई ये दोनों राहत केवल आर्थिक निर्णय नहीं हैं, बल्कि राजनीति की दिशा बदलने का संकेत भी देती हैं. पिछले एक दशक में भाजपा ने राष्ट्रवाद और हिंदुत्व जैसे भावनात्मक मुद्दों को अपनी चुनावी राजनीति का आधार बनाया. इसके साथ ही गरीबों को लक्षित कल्याणकारी योजनाओं का मेल जोड़कर उसने एक अजेय समीकरण खड़ा किया. किंतु, हाल के वर्षों में स्थिति बदलती प्रतीत होती है. राम मंदिर निर्माण जैसे ऐतिहासिक आयोजन और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े अभियानों के बावजूद अपेक्षित राजनीतिक लाभ न मिलना, इस बदलाव की पहली आहट है. 2014 से भाजपा की रणनीति का आधार दो स्तंभ रहे लगभग 20 प्रतिशत लाभार्थी वर्ग और 20 प्रतिशत हिंदुत्व-राष्ट्रवाद का कोर वोट बैंक. दोनों के सम्मिलन ने पार्टी को लगातार सफलता दिलाई. किंतु 2024 के आम चुनाव में यह समीकरण उतना असरदार नहीं दिखा.

हाल के सर्वेक्षण इस ओर इशारा करते हैं कि जनता अब भावनात्मक नारों से अधिक महंगाई, बेरोजगारी और रोज़मर्रा की तकलीफ़ों पर ध्यान दे रही है. राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के मुद्दे प्रासंगिक तो हैं, पर उनकी चमक फीकी पड़ती जा रही है. यही कारण है कि सरकार कोर्स करेक्शन की राह पर दिखाई देती है. बीजेपी का मज़बूत सहारा मिडिल क्लास रहा है. लेकिन, यह वर्ग अब टैक्स के बोझ, महंगाई और नौकरी की अनिश्चितता से असंतुष्ट दिखने लगा है. यही असंतोष यदि गहरा होता है, तो भाजपा के कोर वोट बैंक में दरार पड़ सकती है. इसे ध्यान में रखकर ही सरकार ने इनकम टैक्स माफी और अब जीएसटी रिफॉर्म लागू किए. दोनों फैसलों का मकसद स्पष्ट है मिडिल क्लास की नाराज़गी कम करना और उसे पार्टी से जोड़े रखना. सरकार के लिए दूसरी चुनौती गरीब और निम्न मध्यम वर्ग की बेचैनी है. मुफ़्त राशन, गैस सिलेंडर और प्रत्यक्ष लाभांतरण योजनाएँ भले ही राहत देती हों, परंतु वे दीर्घकालिक समाधान नहीं हैं. गरीब तबकों में यह समझ विकसित होने लगी है कि भावनात्मक मुद्दों से उनके जीवन स्तर में सुधार नहीं होता. यही कारण है कि विपक्ष ने अपनी रणनीति बदली. उसने हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के मुद्दों से दूरी बनाकर महंगाई और बेरोजगारी जैसे असल सवालों पर ध्यान केंद्रित किया. संविधान बचाओ अभियान और वोट चोरी विरोधी आंदोलन जैसे प्रयास इसी नई दिशा का हिस्सा हैं.

विपक्ष लंबे समय से भाजपा के भावनात्मक एजेंडे के सामने कमजोर साबित होता रहा है. किंतु, अब उसके पास वह अवसर है, जिसका इंतज़ार वर्षों से था. यदि वह गरीब और लोअर मिडिल क्लास की चिंताओं को सही ढंग से राजनीतिक संदेश में बदलने में सफल हुआ, तो भाजपा के लिए चुनौती गंभीर हो सकती है. हालांकि, विपक्ष की सबसे बड़ी परीक्षा यही है कि वह जनता को विश्वास दिला पाए कि वह केवल नाराज़गी भुनाने के बजाय ठोस विकल्प भी प्रस्तुत कर सकता है. यदि ऐसा हुआ, तो राजनीतिक विमर्श का केंद्र सचमुच बदल जाएगा. मोदी सरकार की विशेषता यह रही कि वह समय रहते कोर्स करेक्शन करती है. पिछले 11 वर्षों में जब भी जनता का मूड बदलता दिखा, सरकार ने नीतियों में बदलाव किया.

जीएसटी और आयकर सुधार उसी प्रवृत्ति का विस्तार हैं. फिर भी चुनौती यह है कि क्या केवल टैक्स और उपभोक्ता वस्तुओं में राहत से जनता लंबे समय तक संतुष्ट रह पाएगी! महंगाई, बेरोजगारी और असमानता जैसे प्रश्न यदि गहराते रहे, तो ये कदम केवल अस्थायी राहत भर साबित होंगे. भारतीय राजनीति के स्वरूप में अब एक नया मोड़ दिखाई देता है. आने वाले वर्षों में मुकाबला केवल राम मंदिर बनाम विपक्ष या राष्ट्रवाद बनाम सेक्युलरिज़्म तक सीमित नहीं रहेगा. नई राजनीति की धुरी होगी %महंगाई बनाम राहत, बेरोजगारी बनाम अवसर. यह परिवर्तन भारतीय लोकतंत्र के लिए सकारात्मक भी हो सकता है. क्योंकि, इससे राजनीतिक विमर्श जनता की असल ज़रूरतों के करीब जाएगा. किंतु इसके साथ यह भी तय है कि भाजपा और विपक्ष, दोनों को अपनी रणनीति में गहरे बदलाव करने होंगे. जीएसटी और इनकम टैक्स रिफॉर्म जैसे फैसले केवल आर्थिक सुधार नहीं, बल्कि राजनीतिक संदेश भी हैं. वे संकेत देते हैं कि मोदी सरकार ने बदलते समय की नब्ज़ को समझा है और अपनी रणनीति में बदलाव शुरू कर दिया.

अब प्रश्न यह है कि क्या विपक्ष इस मौके का लाभ उठाकर जनता के वास्तविक मुद्दों को एक सशक्त विकल्प में बदल पाएगा! क्या भाजपा का आज़माया हुआ फार्मूला भावनात्मक मुद्दों और आर्थिक राहत का मिश्रण आगे भी कारगर होगा! एक बात तय है कि भारतीय राजनीति की पिच बदल रही है. आने वाले चुनावों में असली जंग राष्ट्रवाद की नहीं, बल्कि रोज़मर्रा की तकलीफ़ों और राहत की राजनीति की होगी.

गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले से सावधान रहना होगा

मोदी से व्यापार वार्ता के लिए सहमत हुए ट्रंप

मोदी ने चीन में आयोजित एससीओ की बैठक में शामिल होने का निर्णय लिया. यह ट्रंप के लिए जबरदस्त झटका था. अगर रूस, चीन, ईरान व भारत एक मंच पर होंगे तो ट्रंप के टैरिफ युद्ध की सारी हवा निकल जाएगी. इसका ट्रंप को एहसास था, इसलिए उन्होंने कहा कि हम भारत व रूस को डीप, डार्क चीन के हाथों खो चुके हैं. लेकिन ट्रंप को जल्द ही महसूस हो गया कि भारत को खोना अमेरिका के लिए काफी हानिकारक होगा, उन्होंने मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्हें फिर से अपना दोस्त कहा.

आने वाले कुछ सप्ताह में मैं अपने बहुत अच्छे दोस्त प्रधानमंत्री मोदी से बातचीत करने जा रहा हूं. मुझे विश्वास है कि हमारे दोनों महान देशों के लिए सफलतापूर्वक निष्कर्ष पर पहुंचने में कोई कठिनाई नहीं होगी. अमेरिका के राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप के इस बयान के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, भारत व अमेरिका करीबी दोस्त व प्राकृतिक साथी हैं. हमारी टीमें इन वार्ताओं का जल्द निष्कर्ष निकालने के लिए कार्य कर रही हैं. मैं भी राष्ट्रपति ट्रंप से बातचीत करने जा रहा हूं. हम साथ मिलकर काम करेंगे अपने लोगों का सुनहरा व अधिक समृद्ध भविष्य सुनिश्चित करने के लिए. इन दोनों नेताओं के बयानों से कुछ महत्वपूर्ण संकेत मिल रहे हैं. दोनों आपस में बातचीत करने के लिए तैयार हैं. दोनों देशों की टीमें व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने के बहुत करीब हैं और उसके तय होने के बाद ही मोदी व ट्रंप आपस में वार्ता करेंगे, बल्कि व्यापार समझौते की घोषणा करेंगे.

मोदी व ट्रंप के रिश्तों में खटास आनी तो उस समय से ही शुरू हो गई थी, जब बाइडेन के कार्यकाल के दौरान मोदी अमेरिका की आधिकारिक यात्रा पर थे और ट्रंप ने माई फ्रेंड मोदी इज कमिंग कहते हुए उम्मीद व्यक्त की थी कि मोदी उनसे मिलेंगे व उनका चुनाव प्रचार करेंगे, लेकिन मोदी उनसे नहीं मिले. बदले में ट्रंप ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में मोदी को आमंत्रित नहीं किया, अवैध अप्रवासी भारतीयों को हथकड़ी व बेड़ी पहनाकर मिलिट्री हवाई जहाज से वापस भारत भेजा और फिर जब मोदी अमेरिका गए तो व्हाइट हाउस के गेट पर उनका एक जूनियर अधिकारी से स्वागत कराया, जबकि उस दिन कई अन्य राष्ट्रों के प्रमुखों को ट्रंप ने स्वयं रिसीव किया था. फिर ऑपरेशन सिंदूर की सीजफायर का सारा श्रेय ट्रंप ने स्वयं लेने का प्रयास किया और 40 से अधिक बार कहा कि व्यापार करने का लालच देकर उन्होंने भारत व पाकिस्तान के बीच युद्धविराम कराया था. ट्रंप यह चाहते थे कि कनाडा में जी-20 की बैठक के बाद मोदी व पाकिस्तान के जनरल आसिम मुनीर उनके साथ व्हाइट हाउस में लंच करें और संयुक्त रूप से नोबेल शांति पुरस्कार के लिए उनके नाम का प्रस्ताव रखें.

मोदी ने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम का हवाला देते हुए लंच निमंत्रण स्वीकार नहीं किया. वैसे भी ट्रंप के लिए नोबेल शांति पुरस्कार की सिफारिश कैसे की जा सकती थी, जब वह गाजा में इजराइल द्वारा किए जा रहे नरसंहार का समर्थन करते हैं और 24-घंटे में यूक्रेन युद्ध रुकवाने का दावा करने के बावजूद अभी तक कुछ नहीं कर पाए हैं. इस सबसे ट्रंप इतने क्षुब्ध हुए कि भारत पर 25 प्रतिशत का टैरिफ लगाया फिर उसमें 25 प्रतिशत अतिरिक्त जुर्माना जोड़ा यह कहते हुए कि भारत प्रतिबंध के बावजूद रूस से तेल आयात कर रहा है, जबकि यूक्रेन-रूस का युद्ध शुरू होने पर अमेरिका के कहने पर ही भारत ने रूस से तेल लेना शुरू किया था, ताकि तेल के ग्लोबल दामों को नियंत्रित रखा जा सके. अमेरिका स्वयं रूस से खाद व अन्य चीजें आयात करता है, जिनके बारे में ट्रंप का कहना है कि उन्हें मालूम नहीं. कैसा राष्ट्रपति है जिसे अपने देश के बारे में ही कुछ मालूम नहीं? फिर ट्रंप ने कहा कि वह स्क्वाड की बैठक में शामिल नहीं होंगे, जिसकी मेजबानी भारत करेगा.

-शाहिद ए चौधरी

घुसपैठियों की समस्या से जूझता असम

चुनाव आयोग ने बिहार के बाद देश के सभी राज्यों में वोटर लिस्ट का गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) करवाने की सोची है, जिस पर राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के चुनाव अधिकारियों ने सहमति जताई है. आमतौर पर देश के उत्तरपूर्वी राज्यों, समुद्र तटीय राज्यों तथा आदिवासी बहुल राज्यों में घुसपैठियों की समस्या बनी रहती है. इस समस्या को सिर्फ राजनति के चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए. क्योंकि यह क्षेत्र की डेमोग्राफी या आबादी संतुलन को बुरी तरह बिगाड़ कर वहां के मूल निवासियों का हक छीन सकती है. ये लोग अपने ही घर में बेगाने हो जाते हैं. क्योंकि उनकी जमीन, संसाधनों व रोजगार के अवसरों को घुसपैठिए तेजी से हड़पने लगते हैं. घुसपैठ अनेक वर्षों से चल रही है लेकिन वोट बैंक की राजनीति चलाने वाले नेताओं ने इस ओर से आंख मूंद ली थी. कुछ तो लगातार इसे बढ़ावा देते रहे. असम के 9 जिलों में बांग्लादेशी मुस्लिमों ने भारी घुसपैठ की और वह वनभूमि चारागाह, सरकारी जमीन हड़पने लगे हैं. इस लैंड जिहाद की वजह से घुसपैठिए मुस्लिमों की आबादी बहुसंख्यक हो गई है और हिंदुओं की जनसंख्या दिनोंदिन घटती चली जा रही है. असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने अपर असम के

विधानसभा मतदाता क्षेत्र में नाम दर्ज कराने वाले इन घुसपैठियों को कुछ पार्टियां संरक्षण देती हैं. इनकी मौजूदगी से तनाव बढ़ता है और स्थानीय जनता की परेशानी बढ़ जाती है. ये घुसपैठिए हिंसा पर उतर आते हैं और पत्थर व लाठियां लेकर वनकर्मियों पर टूट पड़ते हैं.

जिलों में पूर्ण वर्चस्व जमाने वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों के लैंड जिहाद का पर्दाफाश किया. अब इन घुसपैठियों का अगला लक्ष्य लखीमपुर और गोलाघाट जिले हैं. वनभूमि पर उन्होंने अवैध कब्जा कर लिया है. ऐसा ही चलता रहा तो अगले 20 वर्षों में असम के जंगल खत्म हो जाएंगे. इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए पिछले 4 वर्षों में मुख्यमंत्री सरमा ने घुसपैठियों के निष्कासन की सख्त मुहिम चलाई है और 40,000 एकड़ भूमि घुसपैठियों के चंगुल से मुक्त कराई है. असम के काझीरंगा राष्ट्रीय वन क्षेत्र में भी घुसपैठ की गई थी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मरने पर भी दिखाता असर चोर को पकड़ा देता मच्छर

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, मच्छर को मामूली मत समझना. वह मरने के बाद भी चोर को पकड़वा देता है. चीन के फूजियान प्रांत के एक घर में चोरी करने के लिए एक चोर घुसा. वहां 2 मच्छरों ने उस चोर को काट लिया. चोर ने इन मच्छरों को मारा तो वह पिये हुए खून समेत दीवार पर चिपक गए. जांच अधिकारियों ने बेहद सावधानीपूर्वक खून के नमूनों को दीवार से इकट्ठा किया. चोर के डीएनए से मच्छरों का सैंपल मैच होने पर चोर को गिरफ्तार कर लिया गया. उसने चोरी की और 4 वारदातों को कबूल किया. इसलिए अब दुनिया के तमाम चोरों को होशियार हो जाना चाहिए. चोरी करने जाएं तो मच्छर बिल्कुल न मारें. मरा हुआ मच्छर भी फंसा देता है.

हमने कहा, एक फिल्म में नाना पाटेकर का डायलॉग है- एक मच्छर भी आदमी को .... बना देता है! मच्छर कई प्रकार के होते हैं. क्यूलेक्स और एनोफिलीज. मच्छर काटने से मलेरिया हो जाता है. कुनैन का आविष्कार होने से पहले बंगाल और छत्तीसगढ़ में हजारों लोग मलेरिया से जान गंवा

देते थे. वहां पोखर, तालाब और पानी का जमाव होने से मच्छर ज्यादा होते हैं. इन राज्यों के अधिकांश लोग मच्छरदानी लगाए बिना सोते नहीं. इसके अलावा एडीस नामक मच्छर के काटने से डेंगू या चिकनगुनिया जैसी बीमारी होती है. डेंगू जानलेवा हो जाता है और चिकनगुनिया में पैर बुरी तरह सूज जाते हैं और 2-3 महीने यह तकलीफ बनी रहती है. एलोपैथी में इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है. सिर्फ पेनकिलर देते हैं. अब मच्छर डीडीटी के छिड़काव से भी नहीं मरते. कछुआ अगरबत्ती, मार्टिन क्वाइल, ओडोमास क्रीम का मार्केट मच्छर की वजह से है. जिस व्यक्ति का 'ओ' ब्लडग्रुप है उसे मच्छर ज्यादा काटते हैं. इसलिए मच्छर से बचने के लिए कंबल ओढ़कर और फैन फुलस्पीड चालू करके सोना चाहिए. देहात में लोग नीम की सूखी पत्तियां जलाकर उसके धुएं से मच्छर भगाते हैं. मच्छर बड़ा चालाक और चपल होता है. उसे मारने की कोशिश करो तो तुरंत उड़कर भाग जाता है. बदन में सरसों का कड़वा तेल लगाओ तो मच्छर पास में नहीं आएगा.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, मच्छर महापुराण की कथा यहीं बंद कीजिए. राग, द्वेष, मत्सर (ईर्ष्या) के अलावा मच्छर से भी दूर रहना चाहिए.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12020 -डॉ. सागर खादीवाला

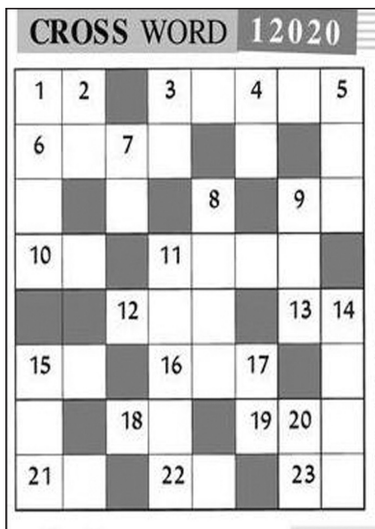

1. किसी बात की स्वीकृति, मान्यता, प्रमाण (उर्दू) 2. बंधी हुई लंबाई का कपड़े का बड़ा टुकड़ा 3. निषिद्ध, वर्जित 4. जिसका नाश हो गया हो 5. स्तंभ रूप में बनी हुई, अधिक ऊंची इमारत (उर्दू) 7. ऋण (उर्दू) 8. आल्हा उदल का चचेरा भाई 9. छापने वाला 11. बोझा ढोने की क्रिया या भाव 14. सांप 15. जल में डूबने की क्रिया या भाव, गोता 17. सूर्य

बाएं से दाएं
1. और, व. 3. आश्विन शुक्ला नवमी 6. पागल होना, पागलों जैसी बातें करना 9. वेष्टन, एक दैत्य का नाम, फिर, दोबारा (सं.) 10. लिखने की स्याही 11. महादेव 12. हाथ से सूत कातने का एक यंत्र 13. शायर, कविता रचने वाला 15. चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा 16. बंदर 18. महीना, मास 19. अनेक प्रकार के 21. कीड़ा-मकोड़ा, जमी हुई मैल 22. नाखून 23. वजन, बोझ
ऊपर से नीचे

Solution 12019

आ	न	न	फा	न	न		चा
ल	य		ड़		म	क	र
	ना		ना	म	क	र	ण
सु	भि	क्ष		द	सा	ना	
धा	रा		चुं	द	र		चि
सा	म	ना		गा		प	त्र
ग		शि	का	र	गा	ह	
र	सा	त	ल		ली	ल	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, यात्रा का योग है,व्यय मेंकमी होगी, व्यवसाय मेंसुधार होगा, वर्ष के मध्य में परिश्रम केउपरांत आंशिक सफलता प्राप्त होगी, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, अत्याधिक व्ययहोगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक लाभ के योग हैं, व्यवसाय मेंवृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का मान सम्मान बढ़ेगा, शिक्षा के क्षेत्र मेंवृद्धि होगी, यश कीर्ति बढ़ेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को शत्रु षड्यंत्र से सतर्कता बांछनीय, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को संयम से कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का बचपन की मित्रता का लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अपनी कार्यक्षमता का परिणाम सुखद प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक लगनशील, बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी अपने कार्य के प्रति लगन रखने वाला खेलों में अग्रणी होगा. दूसरों को कभी नुकसान नहीं पहुंचायेगा. सदैव दूसरों की मदद के लिये तत्पर रहेगा. व्यवहारकुशल और स्पष्टवादी होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

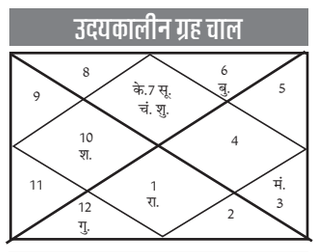

पंचांग

रा.मि. 22 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण षष्ठी शनिवासरे दिन 11/4, कृतिका नक्षत्रे दिन 2/38, हर्षण योगे दिन 3/46, वणिज करणे सू.उ. 5/52 सू.अ. 6/8, चन्द्रचार वृषभ, पर्व- सप्तमीं श्राद्ध, शु.रा. 2, 4, 5, 8, 9, 12 अ.रा. 3, 6, 7, 10, 11, 1 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण षष्ठी को कृतिका नक्षत्र के प्रभाव से कपास, सूत, बिनौला, गुड़, हींग, लालमिर्च, तिल,तेल,में तेजी होगी. जीरा, धनियां, सौंठ, के भाव में साधारण तेजी होगी. वायदा विचार आज के बने भाव विशेष रूप से सभी वस्तुओं में मंदी होगी. भाग्यांक 4742 है.

मेष- विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा. जीविका के क्षेत्र में मनोनुकूल प्रगति होगी. उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा. आर्थिक लाभ का योग है.

वृषभ- व्यापारिक मामलों में सफलता मिलेगी. कोई सुखद समाचार मिलेगा. लेखनादि कार्यों में रूचि रहेगी. पदोन्नति का योग है. श्रम होगा.

मिथुन- किसी मूल्यवान वस्तु के गुमने की आशंका है. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. धार्मिक भावनाओं में वृद्धि होगी. प्रवास का योग है.

कर्क- आत्म विश्वास में वृद्धि होंगी. दूसरों को सहयोग करना पड़ेगा. संतान आदि के संबंध में सुखद समाचार मिलने से विशेष प्रसन्नता होगी.

सिंह- उदर विकार तथा रक्त पीड़ा हो सकती है. व्यवसायिक तनाव दूर होगा. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. सहयोगीजन आपकी मदद करेंगे.

कन्या- पारिवारिक मान प्रतिष्ठा मिलेगी. व्यवसायिक तनाव रह सकता है. घरेलू कार्यों में सफलता मिलेगी. लाभ होगा. परिश्रम अधिक होगा.

तुला- अचानक किसी घटना से चिन्ता होगी. मानसिक तनाव रहेगा. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा. सहयोगी जीवन अच्छा रहेगा.

वृश्चिक- व्यवसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी. सुख सौहार्द बना रहेगा. जमीनजायजाद प्रापर्टी आदि की प्राप्ति के योग हैं. संयम से लाभ होगा.

धनु- मैत्री संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. राजकीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी. दायित्वों की पूर्ति होगी. मानसिक संतोष, सुख बना रहेगा.

मकर- यात्रा में सफलता मिलेगी. उपहार या मान सम्मान मिलेगा. खान पान में संयम रखें. नवीन योजना बनेगी. पुरूषार्थ बना रहेगा. यश मिलेगा.

कुम्भ- आर्थिक समस्याओंका समाधान होगा. मान सम्मान मिलेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. श्रम साध्य कार्य बनेंगे.

मीन- मांगलिक कार्यों की दिशा में सफलता मिलेगी. धन लाभ का योग है. दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा. दिनचर्या सामान्य नियमित रहेगी.

SUDOKU 7152

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7151

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7